हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/17-HL-**HL3**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक: 250 *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): Arvind Pratap Singh

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date):

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]: 0 5 0 6 0 7 3

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): अरविंद

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:

इसमें आठ प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं।

परीक्षार्थी को कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

प्रश्न संख्या 1 और 5 अनिवार्य हैं तथा बाकी में से प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न चुनकर किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिये।

प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।

उत्तर हिन्दी (देवनागरी लिपि) में ही लिखे जाएंगे।

प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।

प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशतः दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 138 1/2

टिप्पणी (Remarks): प्रयास काफी अच्छा है अभ्यास करते रहें

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'A'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: 10 × 5 = 50

(क) खड़ी बोली के विकास में ईसाई मिशनरियों की भूमिका

खड़ीबोली के विकास में ब्रिटिश-आगमन ने एक युगांतकारी भूमिका अदा की। शासन की आवश्यकताओं के साथ-साथ कुछ ईसाई मिशनरियों के धार्मिक जोश ने भी खड़ीबोली के विकास में परोक्ष रूप से योगदान दिया।

ईसाई मिशनरियों ने इस तथ्य को भली-भाँति समझा कि उच्चवर्गीय तबके में भले ही फारसी मिश्रित भाषा का प्रचलन हो पर जनसामान्य में खड़ीबोली का ही प्रचलन था और यही वह वर्ग था, जिसके मध्य वे धर्मप्रचार का कार्य करना चाहते थे। <u>पोप चेम्बरलिन</u> और <u>विकॉप</u> के आगमन के बाद से खड़ीबोली को ही धर्मप्रचार का माध्यम बनाया गया।

ईसाई मिशनरियों की प्रचार सामग्री में बाइबिल के अनुवाद, जीसस के प्रीसेप्ट्स, अन्य धर्मों के तुलनात्मक ईसाई धर्म के लाभ के पैम्फलेट्स होते थे। इन सबके लिए <u>हिन्दी के</u>

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

छापेखाने के प्रयोग के साथ-साथ टाईप पर भी विचार किया गया। मुद्रित रूप ने भाषा का स्वरूप स्थिर करने में योगदान दिया।

सिरामपुर मिशन और विलियम कैरे का नाम उपरोक्त लिहाज से द्रष्टव्य है।

बाद में ईसाई मिशनरियों से वाद-विवाद-संवाद के क्रम में ब्रह्म समाज, प्रार्थसमाज जैसी नवजागरणकालीन संस्थाओं ने भी खड़ीबोली को विशेष महत्त्व दिया।

—— x ——

6½/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) देवनागरी लिपि के मानकीकरण हेतु 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' के सुझाव

देवनागरी लिपि के मानकीकरण हेतु 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' के सक्रिय होने से पूर्व जस्टिस शारदाचरण मित्र, सावरकर बंधु, लोकमान्य तिलक (तिलक फॉण्ट), श्रीनिवास व डा. गोरखनाथ, के व्यक्तिगत प्रयास सामने आ चुके थे।

1935 ई. में सम्मेलन में देवनागरी लिपि के मानकीकरण हेतु विशेष प्रयास दिखाई पड़ा। महात्मा गाँधी की अध्यक्षता में 'नागरी लिपि विचार समिति' का गठन किया गया। काका कालेलकर की संयोजकता में इस समिति ने निम्न सुझाव दिए -

1. श्रीनिवास के उस सुझाव को अस्वीकार किया गया जिसमें महाप्राण व्यंजनों के स्थान पर अल्पप्राण व्यंजन लिखकर नीचे 'ऽ' चिह्न का सुझाव था।

2. 'अ' की बारहखड़ी के सुझाव को अव्यवहारिक करार दिया गया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

3. 'ध' और 'भ' जैसे व्यंजनों में गुजराती घुण्डी को स्वीकार किया गया।

4. श्यामसुंदर दास के नुस्खे सम्बंधी सुझाव को मान्यता दी गई।

5. मात्राओं के सम्बंध में प्रचलित प्रयोग को सही ठहराते हुए भी सुझाव दिया गया कि उन्हें व्यंजनों से थोड़ा हटाकर लिखा जाए।

6. शिरोरेखा लेखन में न रहे यद्यपि मुद्रण में चलती रहे।

बाद में नागरी प्रचारिणी सभा, हिन्दी प्रदेशों के शिक्षामंत्रियों के सम्मेलन, और भारत सरकार के प्रयासों ने इसी नींव पर मानकीकरण की इबारत लिखी।

6½/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) खड़ी बोली आंदोलन और अयोध्या प्रसाद खत्री

खड़ी बोली आंदोलन में दो विशेष दौर देखे जा सकते हैं- पहला जब खड़ीबोली को उर्दू का विरोध झेलना पड़ा और दूसरा जब काव्य-रचना में खड़ीबोली को ब्रजभाषा के बरअक्श विरोध का सामना करना पड़ा। खड़ीबोली आंदोलन में अयोध्या प्रसाद खत्री का योगदान विशेष रूप से इसरे दौर से सम्बंधित है।

स्वयं भारतेंदु ने खड़ीबोली को कविता के लिए अनुपयुक्त बताया था। बालमुकुन्द गुप्त, जगन्नाथदास रत्नाकर के तर्कों के विरोध में अयोध्या प्रसाद खत्री ने निम्न मत रखे-

1. गद्य व काव्य की भाषा एक ही होनी चाहिए।
2. प्रारम्भिक रचनाओं में वैसी परिनिष्ठित भाषा की अपेक्षा न करनी चाहिए।
3. ब्रजभाषा मध्यकालीन प्रवृत्तियों की परिचायक है और उसमें आधुनिकता को वहन करने की

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

क्षमता नहीं है।

इसीलिए उन्होंने खड़ीबोली के प्रारंभिक कवियों के कविता-संकलन प्रकाशित किए और श्रीधर पाठक जैसे कवियों को प्रोत्साहित किया।

—— x ——

5½/10

और वेदना ...

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) ब्राह्मी लिपि और नागरी लिपिः अंतर्संबंध

भारत की सभी प्रमुख लिपियों की जननी ब्राह्मी लिपि को ही माना जाता है। वर्तमान लिपियों का विकास ब्राह्मी लिपि से सीधे न होकर कई चरणों में हुआ है।

आदि ब्राह्मी लिपि से उत्तर भारत में गुप्त काल में गुप्त लिपि का प्रचलन हुआ। इसी गुप्त लिपि को कश्मीर में शारदा लिपि व अपने टेढ़े-मेढ़े प्रतीकों के कारण कई क्षेत्रों में कुटिल लिपि कहा गया।

इसी शारदा लिपि से नागरी लिपि का उद्भव हुआ, जिसके प्रारंभिक प्रमाण हमें सम्राट हर्षवर्धन के समय से देखने को मिलते हैं। देववाणी संस्कृत के लेखन में प्रयुक्त होने से यह ~~नागरी~~ लिपि देवनागरी लिपि भी कहलाई।

इस प्रकार ब्राह्मी लिपि और नागरी लिपि में वही अंतर्संबंध निरूपित किया जाता है जो

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सम्बंध संस्कृत और हिन्दी भाषा का है।

$5\frac{1}{2}/10$

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में आर्य समाज का योगदान

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

नवजागरण के समय में सामाजिक-सांस्कृतिक विचारों के प्रसार की जरूरत सभी समाज सुधारकों को महसूस हो रही थी। उत्तर भारत में आर्य समाज ने विशेषकर इस जरूरत को समझकर खड़ीबोली हिन्दी को प्रचार माध्यम बनाया। राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में आर्यसमाज का योगदान निम्नवत है:-

1. स्वामी दयानंद ने 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना हिन्दी में की।

2. आर्यसमाज ने हिन्दी को तर्क-वितर्क की शैली से समृद्ध बनाया, जिससे हिन्दी आधुनिक विचारों को वहन करने में सक्षम बनी।

3. सम्पूर्ण उत्तर भारत में (पंजाब, गुजरात आदि में भी) आर्यसमाज के प्रसार के साथ-साथ राष्ट्रभाषा हिन्दी का भी प्रसार होता गया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

4. स्वामी दयानंद व परवर्ती आर्यसमाजियों ने संस्कृतनिष्ठ हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा दिया, जिस शैली का प्रयोग बाद में अम्बिकादत्त व्यास व जयशंकर प्रसाद जैसे साहित्यकारों में देखने को मिलता है।

5. आर्यसमाज के शिक्षण-संस्थानों, विशेषकर दयानंद एंग्लो वैदिक कॉलेजों की स्थापना व प्रसार के माध्यम से अंग्रेजी के साथ-साथ खड़ीबोली हिन्दी को भी बल मिला।

इस प्रकार खड़ीबोली हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने में आर्यसमाज का विशेष योगदान है।

———x———

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) स्वाधीनता-आंदोलन के दौर में तमिलनाडु और केरल में राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार पर प्रकाश डालिये। 20

स्वाधीनता-आंदोलन के दौर में दक्षिण भारत में भी राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार का विशेष प्रयास किया गया था और महत्त्वपूर्ण बात यह है कि स्वातंत्र्योत्तर परिदृश्य की भाँति उसे किसी विरोध का सामना नहीं करना पड़ रहा था। वस्तुतः उस समय हिन्दी को ब्रिटिश-विरोध और राष्ट्रीय एकता का प्रतीक माना जाता ~~है~~ था।

तमिलनाडु

सी. राजगोपालाचारी और निजलिंगप्पा जैसे नेताओं ने स्वयं ही हिन्दी प्रचार में सहयोग दिया। इस समय में वातावरण इतना सहयोगी था कि हिन्दी साहित्य सम्मेलन का वार्षिक अधिवेशन भी मद्रास में आयोजित किया गया। था। मद्रास में हिन्दी प्रचार समिति का गठन किया गया।

टी. विजयराघवाचारी के प्रयास से शिक्षा-क्षेत्र

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

में भी हिन्दी को महत्त्व मिलना प्रारम्भ हुआ। यहां ध्यातव्य है कि असहयोग आंदोलन और सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान स्थापित राष्ट्रीय शिक्षा के संस्थानों में हिन्दी को प्रवेश मिला।

केरल

तमिलनाडु की अपेक्षा केरल की भाषा मलयालम से हिन्दी की साम्यता अधिक थी। विशेषकर इस रूप में कि मलयालम पर अन्य दक्षिण भारतीय भाषाओं की तुलना में संस्कृत का अधिक प्रभाव है। स्वाधीनता आंदोलन के दौर में केरल में हिन्दी प्रचार समिति की स्थापना की गई। श्रीराम वर्मा जैसे लेखकों ने केरल मे रहकर हिन्दी में साहित्य रचना की है।

मंदिर-प्रवेश और जातीय भेदभाव के

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

मुद्दों पर गांधी जी ने जब केरल की ओर ध्यान दिया तो पूरे देश का ध्यान भी उस ओर गया। इसी समय आर्यसमाज जैसी संस्थाओं ने केरल में प्रवेश किया और परोक्ष रूप से हिंदी के प्रचार - प्रसार में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की।

तमिलनाडु और केरल, दोनों ही प्रदेशों में स्वाधीनता आंदोलन के दौरान हुई इस प्रगति को स्वातंत्र्योत्तर परिदृश्य में काफी हानि पहुँची। पर आज फिल्मों, बाजार की जरूरतों और सरकारी प्रयासों के माध्यम से पुनः हिंदी का प्रसार संभव हुआ है। त्रिभाषा सूत्र को सही भावना से अपनाकर इस प्रसार को और भी सशक्त बनाया जा सकता है।

—— x ——

12/20

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिन्दी भाषा के मानकीकरण में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की भूमिका पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी भाषा के मानकीकरण में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के योगदान को सही अर्थों में युगान्तरकारी माना जाता है। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने सम्पादक, भाषा-मर्मज्ञ अनुशासनकर्त्ता और विविध ज्ञानों के जिज्ञासु विचारक के रूप में निम्नवत अपनी भूमिका अदा की-

① मानकीकरण के आधार रूप में व्याकरण की जरूरत का रेखांकन किया। उनकी ही प्रेरणा से कामताप्रसाद गुरु का 'हिन्दी व्याकरण' और किशोरीदास बाजपेयी का 'हिन्दी शब्दानुशासन' अस्तित्व में आया।

② 'सरस्वती' के यशस्वी सम्पादक के रूप में शुद्ध भाषा पर जोर दिया। भाषा के क्षेत्रीय प्रयोगों को (लिखित रूप में) हतोत्साहित कर मानक भाषा का मार्ग प्रशस्त किया। यहाँ तक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कि अपने इस प्रयास में आचार्य द्विवेदी को 'हिन्दी की अनस्थिरता' जैसे विवादों का सामना करना पड़ा।

③ हरिऔध और मैथिलीशरण गुप्त जैसे कवियों को प्रेरित कर खड़ीबोली की काव्यभाषा के रूप में प्रतिष्ठा की। इसी योगदान से एक पूरा युग 'द्विवेदी युग' कहलाता है। काव्यभाषा के रूप में प्रतिष्ठित होने से हिन्दी के विकास के नए आयाम खुले।

④ सरस्वती में आचार्य द्विवेदी ने साहित्येतर विषयों के सम्पादन को भी वरीयता दी। इससे हिन्दी को ज्ञान-विज्ञान, तर्क व विचार की भाषा के रूप में स्थापित किया। स्वयं आचार्य द्विवेदी का 'सम्पत्तिशास्त्र' इसका उदाहरण है।

इन सभी रूपों में आचार्य द्विवेदी ने उनने, जिनने, उन्ने जैसे व्याकरण-असम्मत प्रयोगों के साथ-साथ क्षेत्रीय व ब्रजभाषा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

के प्रभाव को सीमित करते हुए हिन्दी भाषा के मानकीकरण का मार्ग प्रशस्त किया।

—x—

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में ब्रह्म समाज के योगदान पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

'ब्रह्मसमाज' को भारत में नवजागरण-कालीन प्रवृत्तियों का प्रारम्भिक और प्रेरक बिन्दु माना जाता है। राजा राममोहन राय के नेतृत्व में ब्रह्म समाज भारतीयों में आधुनिक चेतना का प्रचार तो करना ही चाहता था, साथ-साथ पश्चिमी सभ्यता से तार्किक संवाद स्थापित करना भी उसका लक्ष्य था।

राजा राममोहन राय ने ब्रह्म समाज के विचारों का प्रसार करने के लिए कई पैम्फलेट्स हिन्दी में भी निकाले। उन्होंने बंगदूत नामक अखबार भी प्रकाशित किया जो हिन्दी के प्रारंभिक समाचार-पत्रों में से एक था।

पश्चिमी सभ्यता, विशेषकर ईसाई मिशनरियों से संवाद के क्रम में ब्रह्मसमाज ने तर्कप्रधान प्रगतिशील भाषा को माध्यम बनाया। इससे

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

राष्ट्रभाषा हिन्दी तो समृद्ध हुई ही, बाद में बनने वाले समाज सुधार संगठनों को भी एक मॉडल मिला।

ब्रह्म समाज ने अंग्रेजी व बांग्ला के साथ-साथ हिन्दी को अपनी समाज-सुधार की भावना का माध्यम बनाया। बंकिम चंद्र चटर्जी से पूर्व राजा राम मोहन राय ने ही हिन्दी की क्षमता और प्रभाव का रेखांकन किया था।

इस प्रकार राजा राममोहन राय के नेतृत्व में ब्रह्म समाज ने एक ऐसी परम्परा का सूत्रपात किया जहाँ हिन्दीतर प्रदेशों के महापुरुषों ने राष्ट्रभाषा हिन्दी की आवश्यकता को रेखांकित किया और इस दिशा में अपना योगदान दिया। यह परम्परा बंकिम चन्द्र चटर्जी सुभाषचंद्र बोस से लेकर सरदार पटेल तक देखी जा सकती है।

9/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) राजभाषा हिन्दी के विकास के संदर्भ में त्रिभाषा-सूत्र की परिकल्पना के महत्त्व पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 में हिन्दी को राजभाषा घोषित करने के साथ-साथ यह प्रावधान भी किया गया था कि 15 वर्षों तक शासन-कार्यों में अंग्रेजी का प्रयोग यथावत चलता रहेगा। इस दिशा में राजभाषा आयोग (1955), राजभाषा समिति की अनुशंसा व राष्ट्रपति के आदेश के बाद तमिलनाडु, प० बंगाल व देश के कुछ अन्य हिस्सों में हिन्दी-विरोधी आंदोलन प्रारम्भ हो गया।

ऐसी परिस्थिति में राष्ट्र की एकता को प्राथमिक मानते हुए 1963 ई० में राजभाषा अधिनियम पारित किया गया। ऐसे में हिन्दी समर्थकों की माँग को ध्यान में रखते हुए 1968 ई० में संसद के दोनों सदनों में एक संकल्प पारित किया गया।

1968 ई० के इसी संकल्प में उल्लिखित त्रिभाषा सूत्र राजभाषा हिन्दी के विकास में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

विशेष महत्त्व का है। त्रिभाषा सूत्र में यह प्रावधान है कि प्रत्येक विद्यार्थी को तीन भाषाओं का ज्ञान कराया जाएगा-

(i) प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में होगी।

(ii) माध्यमिक स्तर से एक अन्य भारतीय भाषा। जो अहिन्दी क्षेत्र में हिन्दी होगी और हिन्दी प्रदेशों में दक्षिण भारत या उत्तरपूर्वभारत की कोई भाषा।

(iii) विदेशी भाषा अर्थात् अंग्रेजी।

त्रिभाषा सूत्र की परिकल्पना का विशेष महत्त्व यह भी है कि यह विविधता में एकता की भारतीय विशेषता को संरक्षित रखता है। इससे राजभाषा हिन्दी के साथ-साथ अन्य भाषाओं को भी विकास का पर्याप्त अवसर मिलता है।

साथ ही बच्चे के शैक्षिक विकास और मातृभाषा के सम्बंध को भी रेखांकित किया गया है। इससे एक तरफ तो विद्यार्थी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

अपनी जड़ों से भी जुड़ सकेगा और इसकी तरफ अंतर्राष्ट्रीय ज्ञान - विज्ञान से भी परिचित हो सकेगा। राजभाषा हिन्दी के विकास के साथ - साथ यह सूत्र राष्ट्रीय एकता में भी सहायक सिद्ध होता।

परन्तु व्यवहार में तमिलनाडु में इसे लागू न किया जा सका और उत्तर भारतीय प्रदेशों में इसकी भारतीय भाषा के रूप में 'संस्कृत' को अपना लिए जाने से इस सिद्धांत पर ही कुठाराघात हो गया।

बाद में गृहमंत्रालय ने सरकारी विभागों के संपर्क सम्बंधी जो नियम जारी किए इनमें भी एक प्रकार से त्रिभाषा सूत्र को ही अपनाया गया है (थोड़े - बहुत परिवर्तन के साथ)।

आज त्रिभाषा सूत्र को सही अर्थों में लागू कर हम राजभाषा हिन्दी के रुके हुए

12/20

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विकास को पुनः प्रारम्भ कर सकते हैं।

——— x ———

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) देवनागरी लिपि के मानकीकरण हेतु सुझाव प्रस्तुत कीजिये। 15

बाल गंगाधर तिलक के व्यक्तिगत प्रयासों, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, नागरी प्रचारिणी सभा व सरकारी प्रयासों से हिन्दी भाषा के साथ-साथ देवनागरी लिपि का पर्याप्त मानकीकरण हो चुका है। वर्तमान में मानकीकरण की मूल आवश्यकता तकनीकी रूप से हिन्दी को उपयुक्त बनाने के चलते हुई है।

प्रमुख सुझाव

क **उच्चारण व ध्वनि सम्बंधी**

(i) ऋ, ष, ऌ जैसी अप्रचलित ध्वनियों को हटा देना चाहिए। इनका उच्चारण अब र, स, ल के सहयोग से ही होता है।

(ii) अनुस्वार व अनुनासिक का स्पष्ट नियम हो। जैसे पंचमाक्षर व वर्ग के व्यंजन से अस्पष्टता आती है।

ख **द्विरूपता** - ख-ख, म-भ, ध-ध में से परवर्ती रूपों का प्रयोग हो।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(i) संयुक्त व्यंजन - यह टाइप-राइटरों में प्रमुख समस्या है। मेरा मानना है कि टाइप करते समय या कम्प्यूटर में हलन्त के प्रयोग से इसमें आसानी लायी जा सकती है।

जैसे - पुस्तक > पुस्‌तक

अभी यह थोड़ा अजीब लगता है पर हिंदी टाइप-राइटरों के लगभग 30% बोझ कम हो जाता है।

(ii) ऊपर-नीचे के संयुक्त व्यंजनों को समाप्त कर हलन्त का प्रयोग करना चाहिए।

(iii) 'र' ध्वनि के रूपों , प्र, ट्र, पृ में कमी लाई जानी चाहिए।

इन उपायों के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाओं की ध्वनियों को समाहित करने के लिए ऍ, ऑ, ॲ ध्वनियों व नुक्ते के प्रयोग को मानक लिपि में सम्मिलित किया जाना चाहिए।

———— x ————

9/15

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) "हिन्दी भाषा एवं लिपि के विकास में 'नागरी प्रचारिणी सभा' का ऐतिहासिक महत्त्व है।" इस कथन पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी प्रदेश के बारे में रामविलास शर्मा ने लक्षित किया है कि यहाँ नवजागरण आंदोलन का लेखकों ने ही प्रारम्भ किया और जाग्रत बनाए रखा। ~~अत~~ उन्नीसवीं सदी के अंतिम दशक में 'नागरी प्रचारिणी सभा' की काशी में स्थापना इसी नवजागरण चेतना का परिणाम थी।

नागरी प्रचारिणी सभा ने सभी हिन्दी हितैषियों को एक मंच उपलब्ध कराया। इसके कार्य को कई आयामों में विभक्त किया जा सकता है, जैसे-

(i) नागरी प्रचारिणी पत्रिका के माध्यम से शोध को बढ़ावा।

(ii) कामताप्रसाद गुरु व किशोरीदास वाजपेयी के व्याकरणों का प्रकाशन

(iii) हिन्दी शब्दसागर का प्रकाशन

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(iv) हिन्दी शब्द-सागर की भूमिका के रूप में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के 'हिन्दी साहित्य के इतिहास' का प्रकाशन

(v) अन्य क्षेत्रों में हिन्दी के प्रसार के लिए प्रयाग में 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' की स्थापना ; जो प्रबोध, प्रवीण व प्राज्ञ की परीक्षाओं का आयोजन कराता है।

(vi) 1935 में सम्मेलन ने तत्पश्चात सभा ने लिपि के मानकीकरण के सुझाव प्रस्तुत किए।

आज़ादी तक शायद ही हिन्दी भाषा या देवनागरी लिपि का ऐसा कोई मर्मज्ञ हितैषी रहा हो जो किसी-न-किसी रूप में सभा से जुड़ा न रहा हो। नागरी प्रचारिणी सभा के ऐतिहासिक महत्त्व को इसी रूप में समझा जा सकता है।

9/15

——x——

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

SECTION 'B'

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: 10 × 5 = 50

(क) प्रताप नारायण मिश्र

प्रतापनारायण मिश्र को भारतेंदुयुगीन जिंदादिली का प्रतीक और पर्याय माना जा सकता है। उनकी भाषा का प्रवाह और व्यंग्य अभूतपूर्व था। उनका व्यक्तित्व बहुआयामी भी था, इस रूप में वे नवजागरण की अभिव्यक्ति भी थे।

प्रतापनारायण मिश्र 'ब्राह्मण' पत्र के सम्पादक थे तो कविताएँ भी लिखते थे। निबंधकार के रूप में 'आप', 'कान', 'भौं', 'बात' में वे हँसमुख गद्य के साथ उपस्थित होते हैं तो नाटककार के रूप में इन्होंने रेल का विकट खेल, कली कौतुक, भारत दुर्दशा की रचना की।

इस प्रकार भारतेंदु मण्डल के सबसे प्रमुख सदस्य प्रतापनारायण मिश्र ने विभिन्न विधाओं में अपनी जिंदादिली को सजीव कर

5½

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी भाषा व साहित्य को समृद्ध किया।

———X———

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) कविवचन सुधा

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बालाबोधिनी और हरिश्चंद्र पत्रिका के साथ-साथ भारतेंदु हरिश्चंद्र ने कविवचन सुधा का भी सम्पादन किया। इस समय तक कविता की भाषा ब्रजभाषा ही थी परन्तु भारतेंदु ने कविवचन सुधा के माध्यम से नए कवियों को मंच प्रदान किया और इस प्रकार भारतेंदु मण्डल कहे जाने वाले साहित्यकारों के समूह का निर्माण हुआ।

इस पत्रिका के माध्यम से भारतेंदु ने नए-नए विषयों और आधुनिक समस्याओं की ओर ध्यान आकृष्ट कराया। इस प्रकार यह पत्रिका आधुनिकता की वाहक बनकर आई। अब शिक्षा, बेरोजगारी, टिकट, टैक्स जैसे विषयों पर कविताएँ लिखी जाने लगीं।

कविवचन सुधा के माध्यम से ही बाद में भारतेंदु ने अन्य नई साहित्यिक विधाओं

प्रकाशनकाल भी बताएँ

5½/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

विशेषकर नाटक को भी प्रोत्साहन दिया।

—X—

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ग) हिन्दी की मनोवैज्ञानिक उपन्यासधारा

हिन्दी की मनोवैज्ञानिक उपन्यासधारा ने सामाजिक यथार्थवादी शैली के समांतर एक नई दुनिया के दरवाजे पाठकों के लिए खोले।

मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में पात्रों की संख्या कम होती थी। पात्र चिंतनशील व आत्मलीन रहते हैं अतः भाषा अपेक्षाकृत गहरी व संश्लिष्ट रहती है। मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में काम व कुण्ठा जैसी समस्याओं पर चर्चा की गई जैसे शेखर व शशि का प्रसंग। ऐसे में कई सामाजिक वर्जनाओं पर इनका प्रभाव अपेक्षा से कहीं ज्यादा ही पड़ा।

थोड़ा और विस्तार करें

प्रमुख उपन्यासकार

जैनेन्द्र - त्यागपत्र

इलाचन्द्र जोशी - संन्यासी

अज्ञेय - शेखर: एक जीवनी, नदी के द्वीप

5/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) केशवः कठिन काव्य के प्रेत

केशव को कठिन काव्य का प्रेत इसलिए कहा जाता है कि इन्होंने साहित्य की रचना सहृदयता से नहीं विद्वत्ता से की है-

"भाषा बोलि न जानिहैं
जिनके कुल के दास
तिन भाषा कविता करी
कविकुल केशवदास।"

रामचंद्रिका, कवि-प्रिया, रसिकप्रिया जैसी रचनाओं में छंदों का वैविध्य, चमत्कार सृष्टि, व विभिन्न काव्यशास्त्रीय प्रतिमानों के उदाहरण के रूप में काव्य रचना करने से कई स्थानों पर पाठक को कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

परन्तु यह सर्वथा सत्य नहीं है। एक तो केशव ने संस्कृत काव्यशास्त्र से हिन्दी पाठकों को परिचय कराया, वह भी सरस रूप

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

में और केशव के कुछ गुणों यथा संवाद-योजना का प्रशंसा आचार्य शुक्ल ने भी की है।

" भातु कहाँ नृपतात
गए सुरलोकहिं
क्यों सुतशोक लए। "

5/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ड़) पद्माकर का श्रृंगार-वर्णन

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पद्माकर रीतिकाल के दूसरे छोर पर खड़े कवि हैं। हिम्मतबहादुर विरुदावली, पद्माभरण, जगद्विनोद, गंगालहरी जैसी रचनाओं से भी स्पष्ट है कि भक्ति श्रृंगार व नीति, वीरता सभी विषयों पर उन्होंने कलम चलाई है।

पद्माकर के श्रृंगार-वर्णन में चेष्टाओं का प्रभाव प्रमुख है। यथा-

"फाग की भीर अभीरिन में गहि
गोविन्दै ले गई भीतर गोरी।
भाई करी मन की पद्माकर
ऊपर नाई अबीर की झोरी।
छीनि पितांबर कम्मर ते सु
बिदा दई मीड़ि कपोलन रोरी
नैन नचाय कह्यो मुसकाय
लला फिरि आइयो खेलन होरी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

पद्माकर के श्रृंगार में नायक - नायिका रूप होली में एकमेक हो जाते हैं

मोरी के रंग भीजियो साड़ी

साड़ी के रंग भीजियो गोरी।

यह वर्णन प्रभावी, रीतिबद्ध व कुछ मुक्त रूप में व्यक्त हुआ है।

$\frac{8\frac{1}{2}}{10}$

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) स्त्री-विमर्श के आलोक में समकालीन हिन्दी उपन्यास पर विचार कीजिये। 20

स्त्री-विमर्श एक विश्वदृष्टि है जो पितृसत्तात्मक संरचनाओं के विखण्डन पर जोर देती है। हिन्दी उपन्यास में स्त्री-विमर्श की उपस्थिति नवलेखन के दौर से देखी जा सकती है-

प्रमुख उपन्यासकार - कृष्णा सोबती, मन्नू भण्डारी, मैत्रेयी पुष्पा, अलका सरावगी, अनामिका व प्रभा खेतान।

इन उपन्यासों में या तो स्त्री जीवन की समस्याओं को केंद्र में रखा गया है अथवा सामाजिक समस्याओं पर स्त्रीवादी नजरिए से दृष्टिपात किया गया है। इसीलिए चाक अथवा मित्रो मरजानी की भाषा हमारे परंपरागत मूल्यों को चुनौती देती है। यहां एक स्त्री उन्मुक्त भाव से स्त्री यौनिकता पर बात करती मिल जाती है।

इदन्नमम् जैसे उपन्यासों में बुंदेलखण्ड

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

जैसे पिछड़े क्षेत्रों में स्त्री के शोषण, संघर्ष-विषय को कथा बनाया गया है।

वहीं मित्रो मरजानी के बरक्स आपका बंटी समस्याओं को विद्रोह की बजाय संवेदना से देखता है। 'छिन्नमस्ता' या 'कलिकथा वाया बाईपास' में उत्तर आधुनिकतावादी प्रवृत्तियाँ भी दिखने लगती हैं।

स्त्री विमर्श के आलोक में पुरुषों द्वारा लिखे गए उपन्यासों पर गौर करें तो वे विस्थापन, शोषण जैसी समस्याओं पर केंद्रित हैं। स्त्री का शोषण उनके केंद्र नहीं अपितु परिधि में है। स्त्री विमर्श के अनुसार स्त्री उपन्यासकारों के माध्यम से स्वानुभूति का यही प्रश्न मुखर रूप से व्यक्त हुआ है।

10/20

कुछ अन्य उपन्यासों की भी चर्चा करें।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) रीतिकाव्य पर ललित कलाओं का प्रभाव किन रूपों में दिखाई पड़ता है? विवेचना कीजिये। 15

रीतिकाव्य के समय व इतिहास पर गौर करें तो इस समय प्रादेशिक सल्तनतों में भी शान-शौकत की होड़ दिखाई देती है।

इसीलिए दुई शायरी की तरह नृत्य, संगीत, चित्रकला, मूर्तिकला का भी प्रभाव कवियों पर पड़ा।

उदाहरण के लिए बिहारी का यह दोहा देखिए

"कहत नटत रीझत खीझत
मिलत खिलत लजियात
भरे भौन में करत हैं
नैनन ही सों बात।"

यहाँ नृत्य की जैसे भिन्न-भिन्न मुद्राओं को ही प्रकट किया गया है। राजदरबारों की विलासिता और राजपुरुषों को संतुष्ट करने के क्रम में साहित्य को वस्तुतः अन्य कलाओं

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

से प्रतिस्पर्धा करनी पड़ती थी।

पर यह प्रभाव एकतरफा नहीं था। रीतिकाव्य का भी ललित कलाओं पर प्रभाव पड़ा जैसे बिहारी की सतसई व रामायण पर चित्रकलाओं की कई श्रृंखलाएँ हैं।

7½/15

और विस्तार करें

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) जैनेन्द्र के उपन्यास 'त्यागपत्र' के मृणाल के चरित्र पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

त्यागपत्र की मृणाल कहती है कि "पतंग को देखो कितना ऊँचा उड़ जाती है -- मैं पतंग होना चाहती हूँ।

वह फर्श पर कोयले से कारती रहती है।

वास्तव में मृणाल शांत, स्वयं में सहन करने वाली, निर्भीक चरित्र है।

वह गांधीवाद की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति है। जैनेन्द्र के द्वारा रचित अभूतपूर्व पात्र

4/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation